International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 13 Issue – 1 January - June 2025
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

डामोर जनजाति की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का भौगोलिक अध्ययन

सन्तोष कँवर[1], डॉ चन्द्रशेखर जैमन[2]

[1]शोधार्थी, अपेक्स विश्वविद्यालय,जयपुर
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग

शोध सार: भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार की आदिवासी जनजातियाँ पाई जाती है। जिनकी अपनी अलग संस्कृति, भाषा व जीवन शैली होती है, जिन्हे ये हमेशा अश्रुष्ण बनाये रखते है। डामोर जनजाति भारतीय सरकार द्वारा घोषित राजस्थान की 12 जनजातियों में से एक है। यह एक पिछड़ी जनजाति है। यह जनजाति अपनी उत्त्पत्ति चौहान राजपूतों से मानते है। डामोर जनजाति के लोगों को डमरिया भी कहते है। यह जनजाति सदियों से जंगल में रह रही है। इस जनजाति का आर्थिक व सामाजिक विकास नहीं हो पाया है। यह जनजाति अभी भी सीधा सरल तरीके से जीवन यापन कर रही है। यह जनजाति मुख्य रूप से डुंगरपुर, बांसवाड़ा व गुजरात राज्य की सीमावर्त्ती भाग में पाई जाती है। किंतु इसका सर्वाधिक भाग डुंगरपुर की सीमलवाड़ा पंचायत समिति में देखने को मिलता है।

मुख्य शब्द:– आदिवासी, जनजातियाँ, डामोर, सामाजिक व आर्थिक विकास।

प्रस्तावना:– आदिवासी जनजातियाँ सदियों से पहाड़ो व जंगलों में अपना जीवन यापन करते आ रही है। इन दुर्गम्य क्षेत्रों में रहने के कारण इनका सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता है तथा यह पिछड़ेपन का शिकार हो जाते है, इन्हे सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं का भी पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता हैं। इन्हे मजबूरी में आर्थिक तंगी का भी सामना करना पड़ता है। तथा क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ भी इन पर प्रभाव डालती है।

अध्ययन क्षेत्र:–डामोर जनजाति डूंगरपुर, बासंवाडा व गुजरात राज्य की सीमावर्ती भाग में पाई जाती है यह राज्य की जनजाति का 0.63 प्रतिशत है। डामोर जनजाति की कुल जनसंख्या 91.5 हजार है। जिसमें से 56.4 हजार अर्थात 61.61 प्रतिशत डामोर जनसंख्या डूंगरपुर में निवास करती है। डूंगरपूर जिला राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसका विस्तार 23^0 20^0 उत्तरी अक्षांक्ष से 24^0 01' उत्तरी अक्षांश तथा 73^0 22' पूर्वी देशान्तर से 74^0 23' पूर्वी देशान्तर है यह पाँच तहसीलों में विभक्त है आसपुर, डूंगरपुर, सांगवाडा, सीमलवाडा व बिछीबाडा। वर्तमान समय में डामोर जनजाति का आधिक्य सीमलवाड़ा पंचायत समिति में पाया जाता है।

भूगर्भीय संरचना:– भूगर्भीय संरचना की दृष्टि से यह क्षेत्र पूर्व कैम्ब्रियन अरावली श्रृंखला का भाग है। केन्द्रीय तथा उत्तरी भागों में पायी जाने वाली शीष्ट, नीस तथा ग्रेनाइट की चट्टाने इनकी पुष्टि करते है।

ये चट्टाने 2000–2500 मिलियन वर्ष पुरानी है। जिले में ग्रेनाइट चट्टाने मुख्य रूप से पाई जाती है।

जलवायु:– यह क्षेत्र ऊष्ण व आर्द्ध जलवायु वाला क्षेत्र है।

मृदा:– यह क्षेत्र ऊष्ण व आर्द्ध जलवायु वाला क्षेत्र है। यहाँ घाटियों में जलोढ़ मृदा मिलती है जो मध्यम से लाल, लोमी, लेटेराइट प्रकार की होती है। पहाड़ी ढालों पर तथा उनके बीच के भाग पर मिट्टी में आर्द्रता की पर्याप्त मात्रा पाई जाती है जो कि कृषि फसलों के लिए उपयुक्त मानी जाती है। यहाँ एक मात्र माही नदी है जो की बासंवाडा व डूंगरपुर जिलों की सीमा बनाती हैं यह आदिवासियों के लिए वरदान है तथा आदिवासी क्षेत्र में बहने के कारण आदिवासी को इससे काफी लाभ प्राप्त होता है।

अध्ययन का उद्देश्य:– 1. डामोर जनजाति की सामाजिक स्थिति का पता लगाना।
2. डामोर जनजाति के आर्थिक स्वरूप को जानना।

अध्ययन पद्धति:– प्रत्येक शोध कार्य वैज्ञानिक शोध विधि पर आधारित होता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक दोनो ही प्रकार के संमकों के माध्यम से किया गया है। प्राथमिक संमकों का संकलन अवलोकन, साक्षात्कार व प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है।

प्राथमिक संमकों का संकलन देव निर्देशन पद्धति के आधार पर किया गया है जिसमें डुंगरपुर जिले में निवास करने वाली जनजाति के 200 उत्तरदाताओं का चयन किया गया तथा उनसे जनजातिय समुदाय के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास से संबंधित तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई है।

द्वितीय संमको के संकलन हेतु शोध विषय से सम्बन्धित सूचनाएँ, पत्र पत्रिकाओं, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रन्थों गजेटियर व प्रतिवंदनों की मदद ली गई है।

उत्पत्ति:– डामोर जनजाति समूह की उत्त्पत्ति के सम्बन्ध में कोई प्रमाणिक ऐतिहासिक जानकारी उपलब्ध नहीं है लेकिन यह समुदाय अपनी उत्पत्ति चौहान राजपूतों से मानते है। इसलिए इनके गॉव भी राजपूतो के समान ही होते है। इनके विभिन्न गॉवों की उत्पत्ति के सम्बनध में कई किवदंतियाँ प्रचलित है। यथा परमार गॉव के डामोर मुम्बई प्रान्त के किसी स्थान को अपना मूल उद्गम स्थान मानते है। ऐसी मान्यता है कि मुम्बई प्रान्त के परमार राजा के वंशज, दो भाई चौदहवीं शताब्दी में गुजरात आये थे और वहां के तत्कालीन राजा के अतिथि रहे। इन्होनें कुटनीति से राजा को बंदी बना लिया और बड़ा भाई राजा बन गया। एक दिन दोनो भाई राज्य का निरीक्षण करने गये और रास्ते में उन्हें प्यास लगी भगवान मनजी ने एक पटेल के घर पानी पिया, लेकिन छोटे भाई ने पानी पीने से पहले पटेल की जाति पूछ ली, उसने अपनी जाती डोम बताई। परिणामस्वरूप छोटे भाई ने भगवान मनजी को भ्रष्ट करार दिया और उन्हें छोड़कर चला गया। कालान्तर मे डोम का पानी पीने से भगवान मनजी के वंशज डामोर कहलाये।

डामोर जनजाति में कई गौत्र पाई जाती है। जैसे सिसोदिया, राठौड, चौहान, सोलंकी, सरोलिया आदि। डामोर जनजाति में उच्च वर्ग व

निम्न वर्ग दोनो ही पाये जाते है इनमें पादरिया गाँव के डामोर को निम्न वर्ग का माना जाता है।

सामाजिक व्यवस्थाः– डामोर जनजाति की मुख्य भाषा बागड़ी है। डामोर जनजातिय क्षेत्र की जलवायु उष्ण व आर्द्र होने के कारण ये लोग सूती कपड़े पहनते है। पुरूष धोती व फेटा (पगड़ी) पहनता है जबकि महिलाए घाघरा व चोली पहनती है। भीलों की तरह डामोर जनजाति बिखरे हुए अधिवासें में निवास करते है। गाँव की सबसे छोटी इकाई को फला कहते है। एक गाँव में सामान्यतः पॉच से तेरह फल होते है प्रत्येक फला एक गाँव समूह से सम्बन्धित होता है। फले का संस्थापक कोई पूर्वज होता है उसकी के नाम से फला जाना जाता है। गाँव को पाल के नाम से जाना जाता है।

डामोर जनजाति में विवाह की उम्र 12 से 15 वर्ष है विवाहित लड़का अपने माता पिता के साथ तब तक रहता है जब तक छोटे भाई का विवाह नहीं हो जाता छोटे भाई का विवाह हो जाने के पश्चात् वह पिता का घर छोड़कर अलग निवास करता है तथा कृषि हेतु उसे उसका हिस्सा दे दिया जाता है।

डामोर जनजाति में विवाह हेतु प्रस्ताव वर पक्ष की तरफ से भेजा जाता है। विवाह हेतु वधु मूल्य निर्धारित किया जाता है। इनमें बहुपत्नी विवाह, विवाह विच्छेद आदि प्रथाएँ भी प्रचलित है।

डामोर जनजाति की संस्कृति पूर्णतः धार्मिक भावना पर आधारित है वे प्रकृति को परमेश्वर के रूप में मानते है। तथा प्रकृति पर आश्रित है। इसका मानना है कि बुरी आत्माएँ भूत प्रेत का रूप धारण कर लेती हैं जो विभिन्न रूपों में जगंलो में विचरण करते है। यदि कोई मनुष्य जंगल से होकर गुजरता है तब उसका सिर चढ़ना, बुखार आना बुरे सपने आना, रात को नींद न आना आदि लक्षण होने पर ये लोग भूत प्रेत का प्रकोप मानते है। तथा ये लोग भोंपे या तात्रिंक की शरण में जाते है। जो इन्हें भूतों से बचा सकता है। डामोर जनजाति के प्रमुख परम्परागत देवता, डूंगर देव भैरव देव, पीपल देव, सुख देव, गाम देव है। साथ ही यह माताओं की भी पूजा करते है। जिनमें काली माता, तुलसी माता, खान माता, कन्सारी देवी है।

खान माता– एक क्षेत्रीय बन देवी है। जो भूतों से दूर रखने वाली है। ये लोग सुनार से खान माता की चाँदी की छोटी–छोटी पूतलियाँ बनवाते है। जिन्हें मोरपंख से लपेटकर लच्छे के धागे से बांध देते है। इन मूतिर्यो को घर की ताक में बांस की बनी टोकरी में रखते है व उनकी पूजा करते है नवरात्रि में शाकाहारी रहकर, ब्रह्मचर्य का पालन करते है। इसी तरह जोगणिया माता की पूजा डायन से रक्षा हेतु की जाती है। इनके चार प्रमुख भूत होते है। बरमदेव, बेहड़ा भूत, भूज्यां और ज्योतिंग जो पीपल, बरगद, हेमला, बेहड़ा आदि पेडो पर रहते हैं। अतः इसी कारण इन पेडो को नहीं काटा जाता है। तथा कोई भी घर इसके आस–पास नही बनाया जाता है।

अर्थव्यवस्थाः– डामोर जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। कृषि के अलावा वनोत्पाद, व दैनिक मजदूरी ही जीविकोपार्जन का मुख्य साधन है। डामोर जनजाति के लोग आदिवासी कृषि करते है। जिसे वर्तुल खेती कहा जाता है। डुंगरपुर क्षेत्र में धरातलीय स्थिती ऊबड़–खाबड़ होने के कारण डामोर के पास कृषि योग्य भूमि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नही हो पाती है। एक परिवार के पास औसतन 3–4 बीघा जमीन होती हैं यदि वर्षा हुई तो वे वर्ष में दो फसल लेते है। खरीफ की फसल व रबी की फसल। खरीफ की फसल में डामोर मुख्यतः मक्का और दालो का उत्पादन करते है। तथा रबी की फसल में मुख्य रूप से चने की फसल का उत्पादन किया जाता है। नकदी फसल लेने का रिवाज अभी डामोर जनजाति में नही चला है।

वर्तमान समय में सरकार द्वारा किये गये प्रयासों व उनके द्वारा चलाये गये विकास कार्यक्रमों के परिणाम स्वरूप डामोर आदिवासियों में आधुनिक कृषि की तरफ रूझान बढ़ रहा है वे परम्परागत कृषि तकनीकों को छोड़कर आधुनिक कृषि की ओर अग्रसर हो रहे है।

ये खेतों में रासायनिक खाद, प्रमाणिक बीज कीटनाशक दवाईयाँ व रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करने लगे है। किन्तु उनकी अभी भी सबसे बड़ी समस्या जोत का आकार छोटा होना है। साथ ही साथ खेती करते समय लागत का अधिक आना भी है। जो कि एक प्रमुख समस्या है। डामोर जाति के लोग खेतो में सिंचाई हेतु कुँओ का उपयोग करते है। यहां कुओं का जल स्तर भी अधिक गहरा होता है। अतः कृषि हेतु इन्हें पूर्णतः वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है।

इन्हे अपने जीविकापार्जन के लिए खेती के साथ–साथ दैनिक मजदूरी भी करती पड़ती है। मजदूरी करने हेतु इन्हे सागवाड़ा, सीमलवाड़ा कस्बों में जाना पड़ता है कभी–कभी इन्हें अहमदाबाद, गुजरात की तरफ भी प्रवास करना पड़ता है।

डामोर जनजाति के लोग मजदूरी के अलावा वनोपज भी एकत्रित करते है ये जिस क्षेत्र में निवास करते है। वहॉ पर वनों का अधिक्य पाया जाता है। ये क्षेत्र वन संसाधन युक्त होते है। यहॉ पर डामोर परिवार दो प्रकार से वनोत्पाद एकत्रित करता है।

प्रथम – शहद, महुआ, गोंद, सफेद मूसली, जड़ी बूटियाँ, सूखी लकड़ी, कोयला आदि।

द्वितीय– जंगली कंद मूल, गलोर आदि।

वनोपज एकत्रिकरण के अलावा ये लोग बाँस की टोकरियाँ झाडु आदि बनाने का कार्य करते है। ये भार ढोने की ट्रोली का भी निर्माण करते है। जो कि इनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक है।

निष्कर्षः– डामोर जनजाति की अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इनमें शिक्षा का प्रचार प्रसार पूर्ण रूप से नही हो पाया है ये लोग राजकीय सेवाओं में आरक्षण के होते हुए भी प्रवेश नही कर पाते है। क्योंकि इन्हें इसकी पूर्ण जानकारी नहीं होती है। तथा शिक्षा व प्रशिक्षण के अभाव में यह इससे वंचित रह जाते है। तथा अपनी अर्थव्यवस्था को अन्य जनजातियों की तरह ऊँचा नही उठा पाते है। उनमें सुधार नही कर पा रहे है। डामोर आदिवासी उपयोजना क्षेत्र में होते हुए भी वर्तमान में निर्धन अवस्था में है।

सामाजिक दृष्टि से देखे तो डामोर जनजाति के लोग अभी भी पिछडी अवस्था में ही है। इनके समाज में अभी भी ऊँच नीच की भावना व्याप्त है। तथा कई सामाजिक कुप्रथाएँ अभी भी प्रचलित है। ये लोग काफी अंधविश्वासी है तथा भूत, प्रत पुर्नजन्म आदि में विश्वास करते है।

इनकी अर्थव्यस्था प्रकृति पर आश्रित हैं धरातलीय व जलवायु परिस्थितिया न सिर्फ इनके अधिवासो को बल्कि इनके व्यवसायों को भी प्रभावित करती है।

सन्दर्भः–

1. वढेर नरेश कुमारः– डामोर जनजाति में सामाजिक परिवर्तन एक समाज राष्ट्रीय अध्ययन शोध ग्रन्ध (2020)
2. उत्प्रेती हरिशचन्द्रः–''भारतीय जनजातियॉ'' राजस्थान विश्वविद्यालय 1970 पृ. 1
3. लाल, आर,बी, पदमनाभम, एस.वी. मोहीद्धीन, भारत गुजरात, के लोग 1 वाल्यूम ग्ग्प् भाग प्रथम पापुलर प्रकाशन पृ 311–314 संस्करण 2012.
4. शर्मा, राजीव लोचन'' जनजातीय जीवन और संस्कृति'' सहचरी प्रकाशन, कानपुर 1967 पृ 1–5
5. डॉ भल्ला, एल. आर. राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिशिंग हाऊस, चौड़ा रास्ता, जयपुर पृ– 185 (2018)
6. बैराठी. एस (1991) ''आदिवासी संस्कृति, अर्थव्यवस्था और स्वास्थ्य'' रावत प्रकाशन, जयपुर।
7. डॉ गुर्जर रामकुमार, डॉ जाट.बी.सी (2021) "मानव भूगोल," पंचशील, प्रकाशन, जयपुर पृ–316
8. डॉ मौर्य, आर.बी "ट्राईब्स इन इंडिया"